ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-5* June- 2020
Innovation The Research Concept

बुलन्दशहर जनपद के उत्तर–प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद के माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक–शिक्षिकाओं की पर्यावरण के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन

Comparative Study of Environmental Awareness of Teachers and Teachers Working in Secondary Schools of Uttar Pradesh Secondary Education Council and Central Secondary Education Council of Bulandshahr District

Paper Submission: 15 /06/2020, Date of Acceptance: 23/06/2020, Date of Publication: 28/06/2020

अनीता रानी गुप्ता
विभागाध्यक्षा,
शिक्षक शिक्षा स्नातकोत्तर विभाग,
आई0पी0(पी0जी0) कॉलिज,
द्वितीय परिसर,
बुलन्दशहर (उ0प्र0) भारत

सारांश

आधुनिक समय में हमारा पर्यावरण लगातार प्रदूषित हो रहा है, चाहे वह वायु प्रदूषण हो, जल प्रदूषण हो, पहाड़ों का क्षरण हो, पृथ्वी का धसँना हो अथवा भिन्न–2 प्रकार के जीव जन्तुओं का विलुप्त होना हो। सभी पृथ्वी पर जीवन को खतरे में डाल चुके हैं। नगरीकरण, औद्योगिकीकरण, वैश्वीकरण ये सभी ऐसे कारण है जो पर्यावरण को लगातार नुकसान पहुँचा रहे है। ऐसी परिस्थिति में शिक्षक ही एक आशा की किरण है जो विद्यार्थियों को पर्यावरण को बचाने के उपाय बताकर प्रदूषण को कम कर सकता है। परन्तु इसके लिए उसे स्वयं भी जागरूक होना पड़ेगा।

In modern times, our environment is constantly getting polluted, whether it is air pollution, water pollution, erosion of mountains, subsidence of earth or extinction of different kinds of animals. All have endangered life on Earth. Urbanization, industrialization, globalization are all the reasons that are constantly harming the environment. In such a situation, the teacher is the only ray of hope that can reduce pollution by telling students how to save the environment. But for this, he also has to be aware himself.

मुख्य शब्द : उत्तर–प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद, केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद, माध्यमिक विद्यालय, शिक्षक–शिक्षिका, पर्यावरण, जागरूकता।

Uttar Pradesh Council of Secondary Education, Central Council for Secondary Education, Secondary School, Teacher-Teacher, Environment, Awareness.

प्रस्तावना

पर्यावरण एवं मानव के बीच एक गहरा सम्बन्ध है। मनुष्य पर्यावरण के साये में जन्म लेता है, पलता है एवं विकसित होता है। मनुष्य जन्म से ही पर्यावरण के तत्वों से परिचित होता है क्योंकि मनुष्य की आर्थिक क्रियायें पर्यावरण द्वारा प्रभावित होती हैं। मनुष्य प्राकृतिक घटनाओं को करीब से देखता है और अपने कार्यों और अधिवास की रक्षा के लिए विविध उपाय करता है, और यहीं से पर्यावरणीय संघटन शुरू होता है।

औद्योगिकीकरण, शहरीकरण ने प्राकृतिक तत्वों को इतना नुकसान पहुँचाया है कि पर्यावरण लोगों के रहने लायक नहीं रह गया है। लोगों का पर्यावरण बोध इतना घट गया है कि वे यह मानने को तैयार नहीं है कि अज्ञानता के कारण उन्होंने पर्यावरण को इतनी क्षति पहुँचायी है, जिसकी पूर्ति कभी नहीं हो सकती।

वर्तमान समय में पर्यावरण हेतु विश्व स्तर पर अनेक प्रकार के कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं। विश्व, देश, राज्य स्तर पर विभिन्न पर्यावरण जागरूकता के विशेष प्रकार के सम्मेलन आयोजित किये जा रहे हैं।

यदि मानव पर्यावरण के प्रति पूर्ण रूप से जागरूक हो जाए तो विश्व के पर्यावरण एवं वातावरण को पूरी तरह से सन्तुलित एवं शुद्ध बनाने में सहजता होगी।

मानव की जल्दबाजी और उतावले पन से पर्यावरण पर विजय पाने की लालसा ने प्रकृति द्वारा निर्मित परिस्थितिकी तन्त्रों पर प्रतिकूल प्रभाव डाला है जो किसी समाज या राष्ट्र तक सीमित न रहकर अन्तर्राष्ट्रीय पर्यावरण को असन्तुलित कर रहा है। भविष्य में यदि मानव की यही प्रवृत्ति बनी रही तो प्रकृति द्वारा करोड़ो वर्षो की यात्रा के उपरान्त बना प्राकृतिक पर्यावरण नष्ट हो जायेगा।

मानव सहित सभी जीव–जन्तु, पेड़–पौधे, वनस्पति और जड़ तत्वों (पृथ्वी, वायु, आकाश, अग्नि और जल) में गहरा आत्मिक सम्बन्ध है। ये सभी परस्पर एक–दूसरे से सम्बद्ध है। मनुष्य इनका स्वामी नहीं, सहोदर है। वह स्वयं भी इन्हीं तत्वों से निर्मित है और अन्त में इन्ही जड़ तत्वों में विलिन हो जाता है। इस प्रकार भारतीय विचारधाराएँ प्रकृति के साथ सहज समायोजन को जीवन का आधार मानती हैं।

समस्त भारतीय साहित्य वेद, उपनिषद्, पुराण, ब्राह्माण, आरण्यक एवं अलिखित परम्पराएँ प्रकृति पूजा और जीव प्रेम का संदेश ही नहीं देते हैं वरन् इस संदेश को जीवन का अभिन्न अंग बनाने वाली परम्पराओं का भी दिग्दर्शन करते है।

ऋग वेद प्रकृति पूजा के अनुष्ठानों का विश्व में प्राचीनतम् ग्रन्थ है। मत्स्य पुराण, बाराह पुराण, पदम पुराण मनुष्य और प्रकृति के सहोदर भावों को अनुष्ठान के रूप में स्थापित करते है।

नरसिंह पुराण नामक ग्रन्थ में "वृक्ष–ब्रह्म की संकल्पना वर्णित है। अर्थात वृक्ष को ईश्वर के समकक्ष माना गया है। अथर्ववेद में "पीपल"के वृक्ष की आध्यात्मिक महत्ता विवेचित करते हुए विभिन्न देवी–देवताओं से वृक्ष को जोड़कर पूजनीय माना गया है"

सिंधु घाटी की सभ्यता में भी अनेक वृक्षों की पूजा करने के प्रमाण मिले हैं। आज भी आम, पीपल, बरगद, आंवला आदि वृक्ष पूजे जाते है। पीपल का वृक्ष मोहन–जोदड़ो की मुद्राओं पर भी अंकित पाया गया है। वृहत् संहिता में वृक्षायुर्वेद पर एक पूरा अध्याय है।

पर्यावरण के महत्व को स्वतन्त्र भारत के संविधान निर्माताओं ने इन शब्दों में स्वीकार है–

"भारत के प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य होगा कि वह प्राकृतिक पर्यावरण, जिसके अन्तर्गत वन, झील,नदी और वान्य जीव हैं, की रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणी मात्र के प्रति दया भाव रखे।" भारत का संविधान, अनुच्छेद 51 क(6)

इसी प्रकार वाराह पुराण के एक मन्त्र में व्यवस्था है कि "जो व्यक्ति अपने जीवन में एक पीपल, एक नीम का वट लगाए, दस फूल वाले वृक्षों और लताओं का रोपड़ करे, अनार, नारंगी और आम के दो–दो वृक्ष लगाए वह कभी नरक में नहीं जाता है।"इसका अर्थ स्वर्ग या नरक से न होकर स्वच्छ पर्यावरण से है। इसी प्रकार स्कंद पुराण के अनुसार, "सभी प्रकार के पेड़ों को काटना निंदनीय है। विशेषकर वर्षा ऋतु में ऐसा करना सर्वथा वर्जनीय है।"

पृथ्वी ही एक मात्र ऐसा ग्रह है जहाँ मानव जीवन संभव है। इसलिए मानव द्वारा पृथ्वी की जीवनदायिनी क्षमता को संरक्षित करना आवश्यक है। अतः हम सभी का नैतिक कर्तव्य है कि हम अपने पर्यावरण का संरक्षण करें। यह हमारा उत्तरदायित्व है कि हम अपने तथा आगे आने वाली पीढ़ियों के लिए इस ग्रह एवं इसके पर्यावरण को उत्तम एवं सुरक्षित बनायें।

शोध का औचित्य

पर्यावरण उन भौतिक, रासायनिक , जैविक, आर्थिक तथा सामाजिक का योग है जो जीवों को प्रभावित करते है तथा उनके मध्य पारस्परिक सम्बन्ध स्थापित करते है। पर्यावरण को मिट्टी, नमी, वायु तथा तापमान इत्यादि कई घटकों के रूप में आकलित किया जा सकता है। वास्तव में कोई भी बाह्य दबाव वस्तु अथवा परिस्थिति जो किसी भी रूप में जीवों को प्रभावित करती है। वह अन्त में उनके पर्यावरण का एक घटक बन जाती है और ऐसे सभी घटक मिलकर पर्यावरण का निर्माण करते है। दूसरे शब्दों में पर्यावरण उस सभी प्रकार की बाह्य परिस्थितियों तथा प्रभावों का योग है जो जीवों को प्रभावित करते हैं। वृहद रूप में पर्यावरण हमारे चारों ओर का ऐसा वातावरण है जो हमसे शुरू होकर चारों दिशाओं में बढ़ते हुए समस्त ब्रह्माण्ड को अपने में समाहित किये हुए है।

पर्यावरण की कोई सीमा नहीं है। यह सम्पूर्ण, सतत् तथा अविभाज्य है। यह सभी जीवधारियों, मानवों, पशुओं तथा पौधों के लिए समान है। वायु, जल, चट्टानें, पर्वत, पठार, मैदान, पौधे आदि सभी पर्यावरण के ही अंग हैं। पर्यावरण के अन्तर्गत हमारा आस–पड़ोस, गांव, कस्बा, नगर हमारी संस्कृति तथा समाज भी शामिल है। पर्यावरण का तात्पर्य प्राकृतिक तथा मानव निर्मित परिस्थितियां हैं जिसके अन्तर्गत भौतिक, भौगोलिक, जैविक, परिस्थितियों के साथ–साथ समाज, धर्म, संस्कृति, आर्थिक तथा राजनैतिक व्यवस्था भी सम्मिलित है।

पर्यावरण स्थिर नहीं है। कई घटक मिलकर सम्पूर्ण पर्यावरण का निर्माण करते है। पर्यावरण की स्थिति एवं घटक सतत् होने के साथ–साथ एक दूसरे से गतिज साम्य स्थापित करते है। यह साम्यता साधारण निर्भरता से जटिल पारस्परिक निर्भरता पर आधारित है।

मानव में पर्यावरण के प्रति सकारात्मक सोच शिक्षकों द्वारा ही उत्पन्न की जा सकती है। ऐसा माना जाता है कि अध्यापक युगों के निर्माता होते है एवं समाज में क्रान्ति ला सकते है। इसलिए इस शोध कार्य द्वारा माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं की पर्यावरण के प्रति जागरूकता का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है।

अध्ययन के उददेश्यः– प्रस्तुत अध्ययन के निम्नलिखित उददेश्य निर्धारित किये गये–

1. उत्तर–प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद के माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं की पर्यावरण के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।
2. केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद के माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं की पर्यावरण के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।
3. उत्तर–प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद के माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों का पर्यावरण के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।
4. केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद के माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों का पर्यावरण के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।
5. उत्तर–प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद के माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षिकाओं का पर्यावरण के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।
6. केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद के माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षिकाओं का पर्यावरण के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएः–शोध के लिए अधोलिखित शून्य परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया–

1. बुलन्दशहर जनपद के उत्तर–प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद के माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं का पर्यावरण के प्रति जागरूकता के स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. बुलन्दशहर जनपद के उत्तर–प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद के माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों का पर्यावरण के प्रति जागरूकता के स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. बुलन्दशहर जनपद के उत्तर–प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद के माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षिकाओं का पर्यावरण के प्रति जागरूकता के स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध विधि

अध्ययन के शीर्षक को ध्यान में रखते हुए अध्ययन हेतु वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श एवं न्यादर्श विधि

शिक्षक–शिक्षिकाओं का चयन करने के लिए याच्छिक न्यादर्श विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श में विवरण इस प्रकार है–

तालिका नं0–3.1
न्यादर्श का सम्पूर्ण विवरण

क्र0स0	उ0प्र0 माध्यमिक शिक्षा परिषद	शिक्षक–शिक्षिकाओं की संख्या		
		शिक्षक	शिक्षिकाऐं	कुल छात्र
1.	जे0पी0जनता इन्टर कॉलिज, बुलन्दशहर	25	00	25
2.	आर्य कन्या इन्टर कॉलिज, बुलन्दशहर	00	25	25
	योग	25	25	50

क्र0स0	केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद	शिक्षक–शिक्षिकाओं की संख्या		
		शिक्षक	शिक्षिकाऐं	कुल छात्र
1.	खालसा पब्लिक स्कूल, बुलन्दशहर	11	14	25
2.	सन्तोष इन्टरनेशनल स्कूल, बुलन्दशहर	14	11	25
	योग	25	25	50
	महायोग	50	50	100

तालिका नं0–3.2
परिषद/बोर्ड के आधार पर न्यादर्श का विवरणः–

क्र0स0	परिषद का नाम	शिक्षक	शिक्षिकाऐं	कुल योग
1.	उ0प्र0 माध्यमिक शिक्षा परिषद	25	25	50
2.	केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद	25	25	50
	योग	50	50	100

तालिका नं0–3.3
लिंग के आधार पर न्यादर्श का विवरणः–

क्र0स0	लिंग का नाम	उ0प्र0 माध्यमिक शिक्षा परिषद	केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद	कुल योग
1.	पुरूष	25	25	50
2.	महिला	25	25	50
	योग	50	50	100

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में प्रदत्रों के संकलन हेतु स्वनिर्मित उपकरण पर्यावरण जागरूकता मापनी (Environment Awareness Scale) का प्रयोग किया गया हैं।

पर्यावरण जागरूकता मापनी में पर्यावरण से सम्बन्धित विभिन्न 5 आयामों से सम्बन्धित पदों को रखा गया है, जिनका विवरण निम्न प्रकार है–

तालिका नं0–3.4

क्र0स0	आयाम	पदों की संख्या	योग
1	प्रदूषण के कारण	3,4,5,6,10,13,14,20,25,27,28,31,37,38,42,45	16
2	वायु, मृदा एवं वन संरक्षण	9,12,16,17,18,19,21,34,36,39,49,50,51	13
3	ऊर्जा संरक्षण	1,11,33	3
4	मानव स्वास्थ्य संरक्षण	2,7,8,15,24,26,32,40,43,44,46,47,48	13
5	एनीमल हसबैण्डरी एवं वाइल्डलाइफ संरक्षण	22,23,29,30,35,41	6
		योग	51

उपकरण की विश्वसनीयता

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण की विश्वसनीयता अर्द्ध–विच्छेदन विधि से ज्ञात की गयी है जिसके अनुसार उपकरण का विश्वसनीयता गुणांक 0.61 प्राप्त हुआ है अतः प्रयुक्त उपकरण विश्वसनीय है।

उपकरण की वैधता

प्रस्तुत उपकरण की वैधता निर्धारण करने हेतु समरूप वैधता निर्धारण विधि का प्रयोग किया गया है, जिसके अनुसार विभिन्न विशेषज्ञों के मतानुसार प्रयुक्त उपकरण वैध है।

उपकरण का प्रशासन

प्रदत्तों को एकत्रित करने के लिए शोधकर्ता ने बुलन्दशहर जनपद के उत्तर प्रदेश बोर्ड के दो तथा सी0बी0एस0ई0 बोर्ड के दो माध्यमिक विद्यालयों को चुना।

शोधार्थी ने विद्यालयों के प्रधानाचार्यो से अनुमति लेकर मापनी को शिक्षक व शिक्षिकाओं को दे दिया तथा उनके द्वारा दिये गये समय पर जाकर एकत्रित कर लिया।

प्रयुक्त सांख्यिकी

अध्ययन मे मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्रों का सांख्यिकीय विश्लेषण

प्रदत्तों का विश्लेषण उददेश्यों के आधार पर किया गया है, जो इस प्रकार है–

परिकल्पना नं0–1 की जाँच एवं पुष्टि तालिका

तालिका नं0–4.1

उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद के माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक व शिक्षिकाओं की पर्यावरण जागरूकता के सम्बन्ध में मध्यमान अंक, मानक विचलन, क्रान्तिक अनुपात

शिक्षक व शिक्षिकाओं के परिषद का नाम	N संख्या	M मध्यमान	SD मानक विचलन	C.R. क्रान्तिक अनुपात	5 प्रतिशत स्तर पर सारणीकृत मूल्य Df–98 पर
यू0पी0बोर्ड	50	40.04	5.48		
सी0बी0एस0ई0बोर्ड	50	40.98	5.68	.84	1.98

तालिका नं0–4.1 में वर्णित आंकड़ों के आधार पर C-R- का संगठित मान .84 है जबकि d-f-=98 के लिए 5 प्रतिशत स्तर पर C-R- का तालिका मान 1.98 है। इससे स्पष्ट होता है कि उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद के माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक–शिक्षिकाओं की पर्यावरण के प्रति जागरूकता स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अतः परिकल्पना नं0–1 "उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद के माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक–शिक्षिकाओं की पर्यावरण के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" स्वीकार की जाती है।

परिकल्पना नं0–2 की जाँच एवं पुष्टि तालिका

तालिका नं0–4.2

उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद के माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के पर्यावरण जागरूकता के सम्बन्ध में मध्यमान अंक, मानक विचलन, क्रान्तिक अनुपात

शिक्षक के परिषद के नाम	N संख्या	M मध्यमान	SD मानक विचलन	C.R. क्रान्तिक अनुपात	5 प्रतिशत स्तर पर सारणीकृत मूल्य Df–98 पर
यू0पी0बोर्ड	25	40.20	4.78		
सी0बी0एस0ई0बोर्ड	25	42.40	4.49	1.67	2.01

तालिका नं0–4.2 में वर्णित आंकड़ों के आधार पर C-R- का संगठित मान 1.67 है जबकि d-f-=98 के लिए 5 प्रतिशत स्तर पर C-R- का तालिका मान 2.01 है। इससे स्पष्ट होता है कि उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद के माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अतः परिकल्पना नं0–2 "उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद के माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" स्वीकार की जाती है।

परिकल्पना नं0–1 की जाँच एवं पुष्टि तालिका

तालिका नं0–4.3

उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद के माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षिकाओं के पर्यावरण जागरूकता के सम्बन्ध में मध्यमान अंक, मानक विचलन, क्रान्तिक अनुपात

शिक्षिकाओं के परिषद के नाम	N संख्या	M मध्यमान	SD मानक विचलन	C.R. क्रान्तिक अनुपात	5 प्रतिशत स्तर पर सारणीकृत मूल्य Df–98 पर
यू0पी0बोर्ड	25	39.88	6.10		
सी0बी0एस0ई0बोर्ड	25	39.56	6.35	.18	2.01

तालिका नं0–4.3 में वर्णित आंकड़ों के आधार पर C-R- का संगठित मान .18 है जबकि d-f-=98 के लिए 5 प्रतिशत स्तर पर C-R- का तालिका मान 2.01 है। इससे स्पष्ट होता है कि उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद के माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षिकाओं की पर्यावरण के प्रति जागरूकता स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अतः परिकल्पना नं0–3 "उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद के माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षिकाओं की पर्यावरण के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" स्वीकार की जाती है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उददेश्य उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद के विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की पर्यावरण के प्रति जागरूकता की तुलनात्मक अध्ययन करना था। पर्यावरण जागरूकता मापनी के प्रशासन के परिणामस्वरूप प्राप्त आंकड़ो का सांख्यिकी विश्लेषण एवं अर्थापन करने के परिणामस्वरूप निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए–

1. बुलन्दशहर जनपद के उत्तर–प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद के माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं का पर्यावरण के प्रति जागरूकता के स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. बुलन्दशहर जनपद के उत्तर–प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद के माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों का पर्यावरण के प्रति जागरूकता के स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. बुलन्दशहर जनपद के उत्तर–प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद के माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षिकाओं का पर्यावरण के प्रति जागरूकता के स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

विश्लेषण का आधार पर पता चला कि सभी शिक्षक–शिक्षिकाओं में पर्यावरण के प्रति जागरूकता उच्च स्तर की है।

शैक्षिक निहितार्थ

प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष के आधार पर कहा जा सकता है कि माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के छात्र–छात्राओं की पर्यावरण के प्रति जागरूकता स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद के विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं की पर्यावरण के प्रति जागरूकता उच्च स्तर की पायी गयी है। ये ऐसे शिक्षक–शिक्षिकाएँ है जो शिक्षा के माध्यम से पर्यावरण जागरूकता फैला सकते है तथा एक ऐसी नई पीढ़ी तैयार कर सकते हैं, जो पर्यावरण के प्रति पूर्णरूप से जागरुक हो। पर्यावरण के प्रति जागरूकता में वृद्धि हेतु निम्न लिखित कार्य किये जा सकते हैः–

1. कक्षा अध्यापक दैनिक जीवन के उदाहरणों द्वारा पर्यावरण की व्याख्या कर सकते हैं।
2. पाठ्य सहगामी क्रियाओं द्वारा छात्रों को पर्यावरण के सम्बन्ध में जानकारी दे सकते हैं।
3. विद्यालय में कुछ इस प्रकार से कार्यक्रमों का आयोजन किया जाये जिससे छात्रों को पर्यावरण के प्रति जागरूकता स्तर को बढ़ाया जा सके। विद्यार्थियों को सामुदायिक कार्यो में लगाया जा सकता है।
4. पर्यावरण सम्बन्धी योजनाओं को विद्यालयी कार्यक्रमों में शामिल करना चाहिए।
5. विद्यालय के पाठ्यक्रम में पर्यावरण शिक्षा की अनिवार्यता के साथ–साथ कार्य करके सिखाया जाए, शिक्षक अपने साथ–2 विद्यार्थियों को भी पर्यावरण बचाने के तरीके बताये।
6. समय–समय पर विद्यालय एवं समाज में पर्यावरण सम्बन्धी प्रदर्शनियों एवं रैली का आयोजन किया जाय।
7. विद्यालयों में प्रतिदिन होने वाले कार्यक्रमों जैसे– प्रश्नमंच, नाटक, वाद–विवाद आदि कार्यक्रम पर्यावरण से जोडे जाए।
8. शिक्षकों द्वारा पर्यावरण जागरूकता को बढ़ाने के लिए पाठ्य पुस्तकों के साथ–साथ पत्र–पत्रिकाओं, समाचार–पत्रों तथा दूरदर्शन के साधनों का भी प्रयोग किया जाना चाहिए। पर्यावरण पर सेमीनार, वर्कशाप जैसे आयोजन किये जाने चाहिए।

पर्यावरण प्रदूषण आज की ऐसी समस्या है जिसे नहीं रोका गया तो पृथ्वी पर जीवन समाप्त हो जायेगा। सब कुछ नष्ट हो जायेगा। इसके लिए सभी की नैतिक जिम्मेदारी है कि आगे बढ़कर पर्यावरण को प्रदूषित होने

से बचाये। जो वस्तुऐ पर्यावरण के लिए खतरा है, उनका प्रयोग बन्द करें।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *उपाध्याय, राधा बल्लभ, 2010, पर्यावरणीय शिक्षा, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।*
2. *कपिल, एच0के0, 2012, सांख्यिकी के मूल तत्व विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।*
3. *पाण्डे, के0पी0 एवं भारद्वाज, अमिता 2005, पर्यावरण शिक्षा एवं भारतीय संदर्भ, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।*
4. *सैंगर, शिवराज सिंह, पर्यावरण शिक्षा, साहित्य प्रकाशन, आगरा*
5. *सिंह, हरीशंकर, 2011, पर्यावरण शिक्षा, राखी प्रकाशन, आगरा*
6. *शर्मा आर0ए0 , 2008, पर्यावरण शिक्षा, आर0लाल0 बुक डिपो, मेरठ।*